असमीया साहित्य में रामभक्ति के महान गायक माधव कंदली

दीपक कुमार गुप्ता

शोधार्थी, हिन्दी विभाग,

गौहाटी विश्वविद्यालय,

माधव कंदली को असमीया वैष्णव कवियों में उज्ज्वल नक्षत्र मानते हुए लेखिका डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी जी ने अपने प्रसिद्ध पुस्तक 'रामायण: गंगार परा ब्रह्मपुत्रलोई' में लिखा है,-

''कोचबिहार साम्राज्यर रजा महाराज नरनारायणर समसामयिक महान संत कबि शंकरदेवर समयर प्रायः एश बसर आगर वैष्णव असमीया साहित्यर मूल कबिसकलर माजर आटाईतकोई उज्जवल नक्षत्र आसिल माधव कन्द्ली ।'' 1

भक्ति के प्रसार तथा प्रचार में वैष्णव कवियों या भक्तों का योगदान सर्वोच्च है । वैष्णव कवियों ने राम हो या कृष्ण या विष्णु की भक्ति को जीवन का प्रधान लक्ष्य मानकर उसका प्रचार–प्रसार कर अपने जीवन को धन्य किया तथा भौतिक कल्मष से ग्रस्त समाज का उद्धार भी किया । यही कारण है कि आज सैकड़ों वर्षों बाद भी भक्ति की धारा निरंतर भक्तों तथा समाज के हृदय में व्याप्त है । यही धारा वास्तविक तौर पर समाज का पोषण कर उसे मुक्त कर उसका उद्धार कर रही है । डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी के अनुसार माधव कन्दली ने अपने रामायण में वाल्मीकि रामायण के गौड़ीय संस्करण के संस्कृत भाषा का ही अनुकरण किया था । डॉ॰ गोस्वामी के शब्दों में,-

''माधव कन्दलिये तेऊँ रचना करा असमीया रामायनत बाल्मीकिर रामायनर गौड़ीय संस्करणर संस्कृत भाषा अनुकरण करिसिल ।''2

अनंत कन्दली तथा अनेकानेक विद्वानों ने माधव कन्दली रामायण की आलोचना करते हुए लिखा है कि यहाँ पर राम का चरित्र अतिमानवीय अंकित किया गया है । माधव कन्दली के रामायण में राम जहां साधारण मनुष्य की भाँति रोते – बिलखते हैं वहीं लक्ष्मण तथा सीता में भी साधारण मनुष्य की भाँति वार्ता कही गयी हैं । परंतु मेरे विचार में ऐसा शत प्रतिशत सत्य नहीं है । राम का चरित्र यहाँ पर मनुष्य अवतारी परमात्मा के रूप में ही दिखाया गया है । राम कन्द्ली के अनुसार एक मनुष्य रूप में अवतार लिए साक्षात नारायण हैं । अपने गुण समूहों को महाभारत के कृष्ण की भाँति भले ही विराट रूप दिखाकर प्रमाणित नहीं करते । परंतु शिवधनुष भंग कर परशुराम को परास्त करना तथा बाली समेत समस्त राक्षस कुल का संहार कर पृथ्वी को राक्षस विहिन कर देना तथा सभी पात्रों में राम के प्रति श्रदा, प्रेम, श्रद्धा, प्रेम ,भक्ति , समर्पण आदि सारी भावनाओं का होना और इन्द्र ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा राम से निवेदन की याचना तथा राम की स्तुति करना यही प्रमाणित करता है कि राम स्वयं परम ब्रहम हैं । डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी जी इस विषय पर विचार व्यक्त करते हुए लिखती हैं,-

‘‘तदुपरि, कन्द्लीर रामायानत भगवान विष्णुर एक उललेखयोग्य भूमिका आवे । एईखन रामायनर बहुतों चरित्र भगवान विष्णुर गभीर भक्त । एठाईत आसे कौशल्याई आनकि उल्लेख करिसे जे भगवान विष्णुर प्रति थका गभीर भक्तिर बाबेहे तेऊँ रामर दरे एक पुत्र सन्तान लाभ करिसे ।’’3

डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी जी यहाँ इस मत का खंडन करती हैं कि माधव कन्दलि की रामायण में शंकरदेव तथा माधव देव ने बीच – बीच में नव वैष्णव भक्ति वाद के प्रचार के लिए विष्णु भक्ति मुलक पदों को जोड़ा है । हाँ कुछ हद तक जोड़ा गया होगा यह हो सकता है परंतु सम्पूर्ण रामायण में जोड़ा जाना संभव नहीं है । इसी बात को प्रमाणित करते हुए डॉ॰ गोस्वामी जी आगे लिखते हैं,-

''एईटो सत्य जे रामक विष्णु अवतार हीसाबे देखुउवाटोउ नववैष्णववादर प्रचार आरू प्रसारर बाबे श्री शंकरदेव आरू श्री माधवदेव मूल रामयखनत नतुनकोई सन्निविष्ट करिसिल । किन्तु कन्द्लीर रमायानतों निर्दिष्ट कीसुमन कथयांश आऐ, जीबोरत रामक बिष्णुर अवताररुपे ईनिगत दिया होईसे किन्तु एईबोर खूब संभवतः पिसर समयर सनिनविष्टकरण नहय । आनकि ऐनेकुवा केतबोर ऊपमा आसे जिबिलाके रामक बिष्णुर सोईते आरू सीताक लक्ष्मीर सोईते तुलना करिसे । एइबिलाक एईकारने उल्लखयोग्य जे ऐईबिलाक मूल सृष्टि जेन लागे, शंकरदेव बा माधवदेवे पिसत सन्निविष्ट करा येन नालागे ।''4

यहाँ और एक बात उल्लेख करने योग्य है कि मध्यकाल में सम्पूर्ण भारत में जिस प्रकार से विष्णु, राम या कृष्ण भक्ति की या वैष्णव भक्ति की परम्परा का प्रादुर्भाव तथा उसका परवर्ती साहित्य तथा कवियों पर प्रभाव पड़ा यह संभव है कि असम के माधव कन्दली भी उससे अछूते न हों । इनमें भी प्रत्यक्ष ना सही परोक्ष रूप से यह प्रभाव परिलक्षित अवश्य होता है । जिस प्रकार से तुलसीदास जी पर रामानन्द का प्रभाव और अन्य कवियों पर भी अवश्य पड़ा होने का अनुमान भी कोरी कल्पना नहीं हो सकती । डॉ॰ इन्दिरा गोस्वामी ने इसी बात की ओर संकेत करते हुए लिखा है,-

''एईदरे आमी धारना करिव पारों जे कन्दि्लर रचना उपरत रामनन्दर परोक्षभावे हलेउ किसू प्रभाव आवे।''5

इस काव्य में माधव कन्द्ली या शंकर–माधव के वैष्णव भक्ति सम्मिश्रण विषय को छोडकर अगर हम सम्पूर्ण काव्य में रामभक्ति विषय पर विचार करें तो यही उतम होगा । क्योंकि रामभक्ति ही मूल है । इस महान ग्रंथ का आधार तथा उदेश्य भी राम भक्ति की महिमा

का प्रसार करना ही है । अतः सभी मतवादों का त्याग कर हमें 'सप्तकाण्ड रामायण' में रामभक्ति विषय पर विवेचना करने का कार्य करना उतम होगा ।

राम के प्रति भक्ति केवल ऋषि मुनियों में ही नहीं बल्कि सभी पात्रों के हृदय में दृढ़ रूप से बसी है । जब कैकेयी द्वारा राम को चौदह वर्ष का वनवास प्राप्त होता है तब लक्ष्मण भी राम के प्रति अपनी भक्ति तथा सेवा भाव को प्रकट कर वन के लिए तैयार हो जाते हैं । जब लक्ष्मण माता सुमित्रा से आज्ञा लेने हेतु जाते हैं तभी आदर्श भक्ति–भावना का परिचय देते हुए सुमित्रा राम के साथ वन जाने के लिए लक्ष्मण को कहती हैं । अपने पुत्र के हृदय में राम के प्रति भक्ति देख सुमित्रा धन्य होकर आशीर्वाद देती हैं । इसी प्रसंग को अयोध्याकाण्ड में माधव कन्द्ली ने इतनी सुन्दरता से चित्रित किया है । यथा,-

''सफल जीवन मोर कल्याण साधिलों । कत जन्म पुण्ये मइ हेन पुत्र पाइलौ ।

उद्धारिलि बंशक साम्फल उतपति । ज्येष्ठ भाइत भैल तोर इमत भकति ।।''6

केवल लक्ष्मण, सुमित्रा या सीता के ही हृदय में राम की भक्ति नहीं थी । राम के प्रति भक्ति एवं प्रेम तो समस्त प्रजा जनों के भीतर भरी हुई है । राम का विछोह पाकर समस्त प्रजा जैसे जीना ही भूल गए । अपने समस्त कार्यों का त्याग कर केवल राम का ही चिंतन करते प्रजा रोती बिलखती रहती थी । माधव कन्दली ने अयोध्याकाण्ड में ही इस मार्मिक बात का सुन्दर उल्लेख किया है । यथा,-

''एहिमते प्रजाये रामक करे मर्म्म । तेजिल समस्ते लोके यार येन कर्म्म ।

देवरीये देव पुजा करिले बिच्छेद । ब्राहमण सकले न पदय आरो बेद ।

क्षत्रे एरिलेक अस्त्र शस्त्र कर्म्म धर्म्म । वैश्ये एरिलेक कृषि वाणिज्यर कर्म्म ।

शुद्रे एरिलेक सेवा विषादित लोक । पुत्रे मातृ एरिले तेजिल मावे पोक ।

सकले प्रजार भैल असुख आधृत । छत्रिय जातिये तेजिलेक निज वृति ।

देशे देशे प्रजा सबे कान्दे मन्यु करि । सकले नगरी छानि शुनि हरि ।।''7

राम की भक्ति ही समस्त शास्त्र की संपत्ति है । इसलिए माधव कन्दलि राम की भक्ति करने की सलाह देते हैं । वे कहते हैं कि, राम का चरित्र सुनने पर जीव का उद्धार होता है । इसीलिए हरि का स्मरण करना चाहिए । यथा,-

''परम अमृत रामर चरित्र सुना सामाजिक यात ।

असार संसार आर आशा एरी करियो रति रामत ।

रामर भकति एही से संपति समस्ते शास्त्र सम्मत ।

थिर मन करि बोला हरि हरि लागोक जुइ पापत ।।''8

माधव कन्द्ली राम-भक्ति को ही जीवन की परम सिद्धि मानते हैं । उनके अनुसार राम के चरण ही उद्धार का एक मात्र सुलभ साधन है । इसीलिए शरीर का मोह न कर राम में प्रीति होना ही सर्वश्रेष्ठ है । कवि कहते हैं कि इससे पहले कि यह मृत्यु मुखी शरीर कब साथ छोड़ दे, यही उचित है कि पहले ही राम की शरण ग्रहण कर लेना चाहिए । यथा,-

''घोर कलिकाल नहि आत भाल रामत बिने भकति ।

जीबा कतकाल तेजि आलजाल राम पावे दिया मति ।।''

परम अथिर मनुष्य शरीर परे केती क्षण जानि ।

जन्मर साफल हौक लोक डाकि बोला राम राम बाणी ।।''9

अथार्त माधव कंदलि कहते हैं कि इस घोर कलियुग में कोई भी ज्यादा दिन जीवित नहीं रह पाएगा । अतः सारे जंजाल का त्याग कर प्रभु श्री राम के चरणों में मन लगाओं क्योंकी यह अस्थिर शरीर कब साथ छोड़े कोई नहीं जानता है । अतः राम के चरणों में अपनी मति को स्थापित करो यही उचित है ।

जब राम दंडक वन में प्रवेश करते हैं । तब अत्रिमुनि के आश्रम में जाने पर मुनि बहुत प्रसन्न होते हैं । अत्रि मुनि परम राम-भक्त ऋषि थे । उन्होनें राम को परम ब्रहम अवतारी रूप में जान लिया था । इसी हेतु दर्शन देने पर अत्रि मुनि भगवान अपने जन्म को सफल समझकर राम की पुजा करते है । इसी प्रसंग को माधव कन्द्ली ने अरण्य–काण्ड में बड़े ही रोचक ढंग से वर्णन किया है । यथा,-

''अत्रिबर हरिष देखिया राघवक । परम ईश्वर मोर आइला आश्रमक ।

आजिसि जानिलो मइ जन्म सफलिलो । ईश्वर पाद – पदम साक्षाते देखिलो ।।

विधिवते फले जले पूजीया रामक । परम सादरे पूछिलन्त कुशलक ।।''10

वन में बिराध राक्षस जब राम लक्ष्मण और सीता के दर्शन करता है तभी वह समझ जाता है कि यह वही राम जो स्वयं परम ब्रहम हैं । जिन्होने मनुष्य रूप में अवतार लिया है तथा इन्हीं के हाथों वध होकर मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है । अतः राक्षस बीराध मन में हर्षित होकर राम को उकसाता है ताकि वे उसका वध कर मुक्ति दे दें । राम के दर्शन कर, व अपनी भक्ति का वर्णन कुछ इन शब्दों में देता है,-

"हेनशुनि बिराधर परम हरिष । एहेन्ते से राम मन करि बिमरिष ।

आन हाते मरो मोर पाप अन्त भैल । एही मने गुणि खड्ग तोतलाइबाक लैल ।।''11

राम परम ईश्वर हैं । इस बात को मानव तो क्या बड़े–बड़े ज्ञानी रक्षश भी जानते थे । राम की शक्ति का ज्ञान इन्हें था इसीलिए इन्होनें रावण को भी बहुत समझाया । माल्यवान रावण को समझाता है । राम के चरणों में जाकर सीता को समर्पित करने की बात कहता है । राम की ईश्वरीय शक्ति का आभास पाकर वह भक्ति भाव से राम की गुण राशि का वर्णन वह रावण के सम्मुख करता है । माल्यवान समझाता हुआ कहता है कि, राम–लक्ष्मण नारायण के अवतार हैं । अतः रावण समझ जाए । यथा,-

''श्री राम लक्ष्मण नारायण अवतार । सागर्त सेतु बांधे शकति काहार ।

तोक टक्ङ देखाइ लेक यिटो बालीराय । सियो बीर परिला रामर शरछाय ।।''12

लंकाकाण्ड में रावण के युद्ध का वर्णन करने के पश्चात माधव कन्दि्ल राम का गुणगान करते हुए राक्षश सहांरक श्रीराम को प्रणाम करते हैं । वे कहते हैं कि राम के चरणों को छोड़कर उनकी कोई गति नहीं है । यथा,-

''नमो नमो राम राक्षसर अंतकारी । देवर देवता आदि पुरुष मुरारी ।

गति मोर नाही बीने तोमार चरणो । बोला राम राम सभासद गुणे ।।''13

निष्कर्ष :- अप्रमादी कवि माधव कंदली कृत रामायण भारतीय आर्य भाषा में अपना अलग ही महत्व रखती है । वाल्मीकि रामायण का प्रादेशिक भाषा में प्रथमतः अनुवाद करके

कविराज शिरोमणि माधव कंदली ने पूरे असम प्रांत को ही नहीं अपितु समस्त संसार को रामभक्ति की तथा राम-काव्य सृजन की प्रेरणा दी है ।

संदर्भ ग्रंथ-सूची (पाद-टिप्पणी)

1) हाजरिका, पार्थ प्रतिम, अनु. डॉ. इन्दिरा गोस्वामी, गुवाहाटी, रामायण: गंगार परा ब्रह्मपुत्रलोई, भवानी बुक्स, प्रथम संस्करण, 2015, मुद्रित, पृ॰56.

2) वही, पृ. 58

3) वही, पृ. 65

4) वही, पृ. 65

5) वही, पृ. 66

6) दत्तबरुवा, हरिनारायण (सम्पा.), गुवाहाटी, सप्तकाण्ड रामायण, दत्तबरुवा पब्लिशिंग कंपनी प्रा: लि:, चौदहवाँ संस्करण, 2016, पृ. 132

7) वही, पृ. 136

8) वही, पृ. 139

9) वही, पृ. 135

10) वही, पृ. 180

11) वही, पृ. 183

12) वही, पृ. 341

13) वही, पृ. 364